P.G.
SEM-III
Paper-14

डॉ० कुमारी-चम्पा
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज

(ख) काव्य सत्य और अनुकरण के संबंध में प्लेटो का मत स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- प्लेटो के लिए काव्य के संदर्भ में सत्य का प्रश्न ही अनावश्यक है। काव्य में सत्य का अनुकरण नहीं किया जाता। उदाहरण के तौर पर, बच्चों को सुनाई जानेवाली कहानियाँ प्रायः कल्पित और असत्य होती हैं। मूल चुनाव यहाँ सत्य-असत्य का नहीं है, अच्छे झूठ और बुरे झूठ के बीच का है। इस प्रकार प्लेटो की बहस अनुकरण से नहीं, अनुकरण के विषय से रही है। भारत में भी अनेक पुराण कथाएँ ऐसी हैं जिनको लेकर प्रश्न सत्य-असत्य का नहीं है। हम केवल इस तथ्य की ओर आकृष्ट होते हैं कि उसमें कल्पना की सर्जनात्मकता का किस हद तक उपयोग हुआ है। प्लेटो का स्पष्ट मत है कि काव्य में ऐसे विषयों की चर्चा होनी चाहिए जो सद्-मूल्यों पर आधारित हों। विवेकहीन, अपरिपक्व, असंगत, अनैतिक, मन पर दुष्प्रभाव डालने वाले साहित्य का पूर्णतया निषेध होना चाहिए चाहे वह सत्य ही क्यों न हो। उनका स्पष्ट मत है कि साहित्य नैतिक संस्कारों के निर्माण का साधन होना चाहिए। सोच समझकर ही प्लेटो ने अन्यापदेशिक शैली में लिखी गयी कथाओं को भी निषिद्ध माना है।

इस प्रकार प्लेटो की बहस अनुकरण से नहीं है। प्लेटो के मत से मूल सत्य 'प्रत्यय' है। उस सत्य प्रत्यय का अनुकरण प्रकृति है और उस प्रकृति का अनुकरण कलाकृति अथवा कविता में प्रकट होता है। जो अंतर सत्य और असत्य के बीच है, ज्ञान और धारणा के बीच है वही अस्तित्व और आभास के बीच है। कला का स्वभाव अनुकरणात्मक है अर्थात् असत्यमूलक है। अनुकरण का अनुकरण होने के कारण कविता सत्य से तीन गुणा दूर हो जाती है। प्लेटो अपनी बात कुर्सी-मेज बनानेवाले एक बढ़ई का उदाहरण देकर स्पष्ट करते हैं। वे कहते हैं कि रचनाकार वस्तु जगत की चीजों के इस तरह के अनुकरण से प्रभावित होता है। प्लेटो ने सुकरात और ग्लॉकन के संवाद के द्वारा अपने अभिप्रेत को

स्पष्ट किया है।

प्लेटो ने स्पष्ट कहा है कि अनुकर्ता कवि या चित्रकार यथार्थ वस्तुओं का चित्रण नहीं करते, प्रतीयमान वस्तुओं का चित्रण करते हैं ~~क~~ क्योंकि मूल में यथार्थ वस्तु महान शिल्पी (परमात्मा) की बनाई हुई है कवि तथा चित्रकार दोनों ही उसका अनुकरण या नकल करते हैं। उदाहरण के लिए - बढ़ई जिस पलंग या कुर्सी को बनाकर तैयार करता है वह विचार स्वरूप (ईश्वर) के मस्तिष्क में बने रूप की हूबहू नकल है। फिरभी बढ़ई सत्य के काफी निकट पहुँचा है, लेकिन चित्रकार जो उस पलंग का चित्र बनाता है वह तो यथार्थ से 'दोगुना-तिगुना' दूर चला गया है। सत्य से तिगुनी दूर चले जाने की चर्चा करते हुए स्पष्ट है कि बढ़ई जो बनाता है, वह वास्तविक का निर्माण नहीं करता है, वह जो बनाता है वह 'वास्तविक का अनुकरण' मात्र है। अतः मूल पलंग का निर्माता है ईश्वर, दूसरा उसी का निर्माण करता है बढ़ई, तीसरा उसी पलंग का चित्र आँकता है चित्रकार। इसीलिए बढ़ई सत्य से दोगुणा और चित्रकार सत्य से तीनगुना दूर चला जाता है। जो बात चित्रकार पर लागू होती है वही कवि पर भी। क्योंकि दोनों ही एक ही कोटि के प्राणी हैं। जिस प्रकार चित्रकार सत्य से तीनगुण दूर हुआ है। यही बात इस प्रकार से कही जा सकती है कि काव्य 'मूल प्रकृति' का अनुकरण है एवं प्रकृति सत्य का अनुकरण करती है। अनुकरण का अनुकरण होने के कारण कला वास्तविकता से तीनगुणा दूर होती है। अतः कवि का अनुकरण झूठा होने के कारण वह मूल आदर का अधिकार नहीं है।